मृत प्रिय जनों के लिए कौनसी आशा?

मृत प्रिय जनों के लिए कौनसी आशा?

“यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा?” अय्यूब नामक पुरुष ने बहुत पहले पूछा। (अय्यूब १४:१४; *किंग जेम्स् वर्जन*) शायद आपने, भी, इसके विषय में विचार किया है। आप को कैसे लगता यदि आप जानते कि आपके प्रिय जनों के साथ पुनर्मिलन, सबसे उत्तम परिस्थितियों में, इसी पृथ्वी पर संभव था?

खैर, बाइबल प्रतिज्ञा करती है: “तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे . . . वे उठ खड़े होंगे।” और बाइबल यह भी कहती है: “धर्मी लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और उस में सदा बसे रहेंगे।”—यशायाह २६:१९; भजनसंहिता ३७:२९.

ऐसी प्रतिज्ञाओं में सच्चा विश्वास करने के लिए, हमें कुछेक मूलभूत प्रश्नों का उत्तर देना होगा: लोग क्यों मरते हैं? मृतक कहाँ हैं? और हम निश्चित कैसे हो सकें कि वे दुबारा जी सकते हैं?

मृत्यु, और क्या होता है जब हम मरते हैं

बाइबल स्पष्ट करती है कि प्रारंभ में परमेश्वर का इरादा मानवों के मरने का नहीं था। उसने पहली मानवी जोड़ी, आदम और हव्वा, को सृष्ट किया, अदन नामक पार्थिव परादीस में रखा, और उन्हें बच्चे उत्पन्न करने और उनका परादीसीय घर पूरे पृथ्वी भर फैलाने का आदेश दिया। वे केवल तभी मरते यदि वे उसके आदेशों की अवज्ञा करते।—उत्पत्ति १:२८; २:१५–१७.

परमेश्वर की दयालुता के लिए मूल्यांकन की कमी दिखाकर, आदम और हव्वा ने अवज्ञा की और उन्हें निर्धारित दंड भोगना ही पड़ा। “तू अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा,” परमेश्वर ने आदम को कहा, “क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है। तू मिट्टी तो है और मिट्टी में फिर मिल जाएगा।” (उत्पत्ति ३:१९) उसकी सृष्टि के पहले आदम अस्तित्व में न था, वह मिट्टी

था। और उसकी अवज्ञा, या पाप, के कारण, आदम, अनस्तित्व की अवस्था तक, मिट्टी में फिर मिल जाने के लिए दंडादेशित हुआ।

इस प्रकार मृत्यु जीवन का अभाव है। बाइबल वैषम्य दिखलाती है: “पाप की मजदूरी तो *मृत्यु* है, परन्तु परमेश्वर का वरदान अनन्त *जीवन* है।” (रोमियों ६:२३) यह दिखाते हुए कि मृत्यु पूरी बेहोशी की अवस्था है, बाइबल कहती है: “क्योंकि जीवते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे; *परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते।”* (सभोपदेशक ९:५) जब एक व्यक्ति मरता है, बाइबल व्याख्या करती है: “उसका प्राण निकलता है, वह मिट्टी में मिल जाता है, *उसी दिन उसके विचार नष्ट हो जाते हैं।”*—भजनसंहिता १४६:३, ४.

पर, चूँकि सिर्फ आदम और हव्वा ने अदन में उस आदेश की अवज्ञा की, तो क्यों हम सब मरते हैं? यह इसलिए कि हम सब आदम की अवज्ञा के बाद जन्मे, और फलतः हम सब ने उससे पाप और मृत्यु उत्तराधिकार में प्राप्त किया। जैसे बाइबल स्पष्ट करती है: “एक मनुष्य (आदम) के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आयी और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गयी।”—रोमियों ५:१२; अय्यूब १४:४.

लेकिन शायद कोई पूछे: ‘क्या मनुष्यों का अमर प्राण नहीं, जो मृत्यु के बाद जीवित रहता है?’ अनेकों ने यह सिखाया है, यह भी कहते हुए कि मृत्यु दूसरे जीवन का द्वार है। पर वह कल्पना बाइबल से नहीं आती बल्कि, परमेश्वर का शब्द सिखाता है कि आप प्राण *हैं*, आपके सारे शारीरिक और मानसिक गुणों सहित, आपका प्राण सचमुच *आप* ही हैं। (उत्पत्ति २:७; यिर्मयाह २:३४; नीतिवचन २:१०) और, बाइबल कहती है: “जो प्राणी पाप करें—वही मर जाएगा।” (यहेजकेल १८:४) बाइबल कहीं भी नहीं सिखाती कि मनुष्य का अमर प्राण है जो देहांत के बाद जीवित रहता है।

कैसे मनुष्य दुबारा जी सकते हैं

संसार में पाप और मृत्यु के आने के बाद, परमेश्वर ने प्रकट किया कि उसका उद्देश्य यह था कि पुनरुत्थान के द्वारा मृतकों को पुनर्जीवित किया जाए। इसलिए, बाइबल स्पष्ट करती है: “इब्राहीम . . . ने विचार किया कि परमेश्वर [उसके पुत्र इसहाक] को मृत्यु से भी पुनर्जीवित कर सकता था।” (इब्रानियों ११:१७–१९) इब्राहीम का भरोसा गलत नहीं रखा गया, क्योंकि बाइबल सर्वशक्तिमान के विषय कहती है: “परमेश्वर तो मुरदों का नहीं परन्तु जीवतों का परमेश्वर है; क्योंकि उसके लिए वे सब जीवित हैं।”—लूका २०:३७, ३८.

जी हाँ, जिन व्यक्तियों को सर्वशक्तिमान परमेश्वर चुनता है, उन्हें पुनरुत्थान करने की उसे न केवल शक्ति है पर इच्छा भी है। स्वयं यीशु मसीह ने कहा: “इस से अचंभा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने स्मरणीय कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे।”—यूहन्ना ५:२८, २९; प्रेरितों के काम २४:१५.

यह कहने के शीघ्र बाद, यीशु को नाईन के इस्राएली नगर से बाहर आती हुई एक शवयात्रा मिली। मृत जवान एक विधवा का एकलौता बेटा था। उसका अत्यधिक दुःख देखने पर यीशु का दिल दया से भर आया।

इसलिए मुरदे को संबोधित करते हुए, उसने आदेश दियाः “हे जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ!” और जवान उठ बैठा, और यीशु ने उसे उसकी माँ को सौंप दिया।—लूका ७:११–१७.

जैसे उस विधवा के मामले में हुआ, वैसे ही, जब यीशु आराधनालय के पाठासीन अधिकारी, याईर, के घर गया, अत्यानंद फैल गया। उसकी १२ वर्षीय बेटी मर गई थी। जब यीशु याईर के घर पहुंचा, उसने मृत बच्चे के पास जाकर कहाः “हे लड़की, उठ!” और वह उठी!—लूका ८:४०–५६.

बाद में, यीशु का मित्र लाजर मर गया। जब यीशु उसके घर पहुंचा तब लाजर चार दिनों से मरा था। हालाँकि गहराई में दुःखी थी, उसकी बहन मरथा ने, यह कहकर आशा व्यक्त कीः “मैं जानती हूँ कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।” पर यीशु कब्र पर आया, पत्थर हटा दिए जाने का आदेश दिया, और पुकाराः “हे लाजर, निकल आ!” और वह आया!—यूहन्ना ११:११–४४.

अब इसके बारे में सोचिएः उन चार दिनों के दौरान जब वह मृत था, लाजर की क्या अवस्था थी? लाजर ने परमसुख के स्वर्ग या उत्पीड़न के नरक में होने के बारे में कुछ भी नहीं कहा, पर जिसके बारे में वह जरूर कहता, अगर वह वहाँ गया होता। नहीं, लाजर मृत अवस्था में पूर्णतया बेहोश था और “अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय” तक वैसे ही रहा होता अगर यीशु ने उसे पुनर्जीवित न किया होता।

यह सच है कि यीशु के ये चमत्कार केवल अस्थायी लाभ के ही थे, क्योंकि जिन लोगों का उसने पुनरुत्थान किया, वे दुबारा मर गए। परन्तु, १,९०० वर्ष पहले उसने प्रमाण दिया कि, परमेश्वर की शक्ति से, मृतक दुबारा सचमुच जी सकते हैं। इस तरह उसके चमत्कारों के द्वारा यीशु ने छोटे पैमाने पर परमेश्वर के राज्य के अंतर्गत पृथ्वीपर क्या घटित होगा, यह दिखाया।

जब कोई प्रिय जन मरे

जब वह शत्रु, मृत्यु, वार करता है, यद्यपि आप शायद पुनरुत्थान में आशा करते भी हों, तो भी आपका दुःख अत्यंत हो सकता है। इब्राहीम को विश्वास था कि उसकी पत्नी दुबारा जीवित होती, फिर भी हम पढ़ते

हैं कि “इब्राहीम सारा के लिए रोने पीटने को वहाँ गया।” (उत्पत्ति २३:२) और यीशु के विषय में क्या हुआ? जब लाजर मर गया, वह “आत्मा में बहुत ही उदास और बेचैन हुआ,” और उसके शीघ्र पश्चात् उसके “आँसू बहने लगे।” (यूहन्ना ११:३३, ३५) इसलिए, जब आपका कोई प्रिय जन मरता है, तब रोना कोई कमजोरी प्रदर्शित नहीं करता।

जब एक बच्चा मरता है, यह माँ के लिए विशेषतः कठिन होता है। बाइबल उस कड़वे दुःख को कबूल करती है जो एक माँ ही महसूस कर सकती है। (२ राजा ४:२७) बेशक, एक शोकाकुल पिता के लिए भी यह मुश्किल है। “भला होता कि मैं ही तेरे बजाय मरता,” राजा दाऊद ने विलाप किया, जब उसका बेटा अबशालोम मर गया।—२ शमूएल १८:३३.

तोभी, चूँकि आपको पुनरुत्थान में विश्वास है, आपका दुःख अप्रशम्य नहीं होगा। जैसे बाइबल कहती है, आप “औरों के नाईं शोक न” करेंगे “जिन्हें आशा नहीं।” (१ थिस्सलुनीकियों ४:१३) बल्कि, आप प्रार्थना में परमेश्वर के नजदीक आएंगे, और बाइबल प्रतिज्ञा करती है कि “वही तुझे सँभालेगा।”—भजन संहिता ५५:२२.

यदि अन्य प्रकार से दिखाया न हो, तो सब बाइबल उद्धरण *न्यू वर्ल्ड ट्रांस्लेशन ऑफ द होली स्क्रिपचर्स्*, जो अंग्रेजी में प्रकाशित है, उससे हैं।

© 1989 Watch Tower Bible and Tract Society. सर्वाधिकार सुरक्षित

सन् [illegible] में प्रकाशित